PRIVATE MEMBER'S RESOLUTION
RE TIBET

THE MINISTER OF WATER RESOURCES AND THE MINISTER OF PARLIAMENTARY AFFAIRS (SHRI VIDYACHARAN SHUKLA): Sir, I have a submission to make with regard to the Private Member's Resolution here. There is a Resolution listed today in the name of Shri Satya Prakash Malaviya for discussion. My I request the hon. Member to take up this Resolution and move this Resolution after the recess—and we will have to decide that it will be given the first priority after the recess—so that we can have a more purposeful discussion on this matter? I hope the hon. Member would accede to my request and agree for moving this Resolution after the recess of this House. *(Interruptions)*

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): Just a minute. I have to ask the hon. Member.

SHRI M.A. BABY (Kerala): Sir, My suggestion is that the Resolution should not be moved considering the larger interest involved.

प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा: (दिल्ली): अगर वह इस बार रज़ोल्यूशन मूव नहीं करते तो अगली बार आयेंगे कैसे? **(व्यवधान)**

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): The Member would like to say something.

श्री जगदीश प्रसाद माथुर (उत्तर प्रदेश): उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं यह नहीं समझता कि इसका इतना जरुरी है। यह बात सच है कि लेकिन अगले जो वीक आएगा जिसमें कि रज़ोल्यूशन आना है उस में हो सकता है कि बैलट में किसी ओर का नाम पहला आए और उस का नाम तो हम काट नहीं सकते। तो लिहाजा जो बैलट हो चुका है उसको छोड़ कर क्योंकि अगले सप्ताह का बैलट हो चुका है उस बैलट को हम रद्द नहीं कर सकते। उस बैलट के बाद में किसी में हो तो उसमें एडजस्ट किया जाए। एम आई क्लीयर?.....**(व्यवधान)**

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): That can be worked out.

प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा: यह कैसे कहा जा सकता है कि उसकी लॉटरी निकलेगी। वही होगा जिसकी लाटॅरी निकलेगी। यह मूव तो करते।...**(व्यवधान)** यदि आज मूव नहीं करते तो उसको राइट नहीं हो सकता।....**(व्यवधान)**

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): Let him say something.

SHRI SATYA PRAKASH MALAVIYA (Uttar Pradesh): Sir, I have attentively listened to the proposal of the hon. Parliamentary Affairs Minister. I have no objection if it can be listed legally and the House so agrees.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): Does the House so agree?

SOME HON. MEMBERS: Yes.

श्री संघ प्रिय गौतम (उत्तर प्रदेश): महोदय, हाउस के एग्री होने से क्या रूल्ज़ के खिलाफ कोई बात की जा सकती है? How can it be until and unless the legal position is taken care of?

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): That will be taken care of.

The Private Member's Resolution listed in today's List of Business in the name of Shri Satya Prakash Malaviya is postponed and will be taken up on 22nd April in the Private Members' Business as the first item of that day.

And it will be taken up on April 22 as Private Members' Business as the first item of the day.

SHRI M. A. BABY: I am on a point of order. There is a very clear-cut procedure regarding selecting Resolutions of the Members for discussion in the House. The Resolution that is being moved is violative of the procedure which is incorporated in the Rules of Procedure of the Rajya Sabha. I don't know how we will solve it.

SHRI VIDYACHARAN SHUKLA: The hon. Member knows that the House is supreme. It can suspend any rule; it can also pass a Resolution which will give a special position to any particular matter before the House. Therefore, Sir, what you have announced from the Chair would hold good and Mr. Malaviya would move it on the date indicated by you.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): Now the matter is closed.

SHRI CHATURANAN MISHRA (Bihar): I agree with it and Mr. Malaviya has already

[Shri Chaturanan Mishra]

agreed. But the Chair should not say that it will be the first item on that day. You can say this is postponed.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): That question will be considered.

PROF. VIJAY KUMAR MALHOTRA: If a Member is present in the House and he does not move his Resolution, the Resolution automatically lapses.

SHRI SATYA PRAKASH MALAVIYA: I was prepared to move the Resolution but since there was a request from the Government, I have agreed.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): That matter is over now. Mr. Mathur, you will now move your Resolution.

RESOLUTION RE: UNPRECEDENTED RISE IN THE PRICES OF ESSENTIAL COMMODITIES AS A RESULT OF HIKE IN ADMINISTERED PRICES

SHRI JAGDISH PRASAD MATHUR (Uttar Pradesh): Sir, I move the following Resolution:—

""This House expresses its deep concern over the unprecedented rise in the prices of essential commodities as a result of hike in the administered prices of rice, wheat, sugar and petroleum products by Government and urges upon Government to take effective measures to check the steep rise in the prices of essential commodities so as to protect the common man, particularly the weaker sections of society from undue financial hardships."

श्रीमान्, बड़े खेद के साथ इस विषय पर आज हम लोग दोबारा बहस कर रहे हैं। महोदय, महंगाई के सवाल पर, एक बार नहीं मैं समझता हूं कि हर सेशन के अंदर बहस होती रही है और जब-जब यह विषय बहस में आया है, सरकार ने वायदा किया है कि हम महंगाई को कम करेंगे या घटा देंगे। हम सभी को स्मरण होगा कि 1991 के चुनाव के दौरान कांग्रेस पार्टी की ओर से घोषणा पत्र छपा गया था और उसमें वायदा किया गया था कि हम सौ दिन के भीतर 10 परसेंट कीमतें कम कर देंगे, लेकिन कीमतें कम नहीं हुई। इसके साथ-ही-साथ यह भी उन्होंने वायदा किया था कि हम 10 बिलयन जॉब्स या काम लोगों के लिए पैदा करेंगे, लेकिन इस संबंध में भी कुछ नहीं किया गया क्योंकि कांग्रेस की सरकार का रवैया कभी भी आम आदमी के पक्ष में नहीं रहा। केवल ग्रेन-केन-प्रकारेण, किसी-न-किसी प्रकार से हम सत्ता में बने रह सकें और पैसा कमा सकें फिर चाहे वह बोफोर्स का स्कैंडल हो, चाहे वह स्कैम हो, उनकी निगाहें आम आदमी की तरफ न होकर अपने स्वार्थ और अपनी गद्दी पर रही हैं। यही कारण है कि जो वायदे वह करते हैं, वह पूरे नहीं होते हैं। महोदय, मुझे एक घटना याद आती है। बहुत दिन पहले की बात है, चांदनी चौक में एक तांगेवाला जा रहा था। उसने घोड़े की आखों पर प्लिंकर लगा रखा था। उससे पूछा कि, ये इसकी आंखों पर क्या लगाते हो? वह कहने लगा कि, मेरा घोड़ा बहुत होशियार है, मैं इसके लिए घास लाता हूं। यह हरी घास लाने का आदी है, मगर हरी घास नहीं मिलती। मैं सूखी घास ले आता हूं और हरे रंग का चश्मा लगा देता हूं। यह उसे हरी घास समझकर खा लेता है। उसी प्रकार से ये हर चुनाव में वायदा करते हैं, लेकिन वह वायदे पूरे नहीं होते हैं। इन्होंने भारत की जनता को एक ऐसा प्राणी समझा हुआ है जिसको जब चाहे धोखा दे दो।

फिर कीमतें कब बढ़ाई जाती हैं? अगर कीमतें स्वाभाविक रूप से बढ़ें, बजट के बाद बढ़ें तो शायद आश्चर्य नहीं होगा। जैसे अभी 997 करोड़ के लाभ का, जिसमें सरकार को अर्निंग होगी रेलवे बजट आया, मैंने डिटेल में पढ़ा नहीं, लेकिन 997 करोड़ की इस अर्निंग के बाद भी इनका पेट नहीं भरेगा क्योंकि हम जानते हैं कि हर साल का यह रवैया बन गया है। विगत तीन-चार सालों से यह रवैया हम देख रहे हैं कि कीमतें बढ़ा दी जाती हैं और यह बजट के समय नहीं बल्कि बजट के पहले बढ़ाई जाती हैं।

श्रीमन्, बजट का अर्थ क्या है? बजट का अर्थ है कि एक अमुक सरकार अमुक विषय में अमुक समय पर क्या करना चाहती है, क्या उसकी नीतियां हैं, क्या उनका परिणाम होना है, क्या प्रभाव होना है वह बताकर कार्य करे। लेकिन, एक नीति है, एक रवैया है कि असलियत को किस प्रकार छिपाया जाए। बजाय इसके कि बजट का घाटा दिखाया